आज की मुरली का सहज सार ---------- Date:16-08-09

विश्व की सर्व आत्माओं के मुक्तेश्वर (लिबरेटर) बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम पवित्र बनने के बिगर वापिस जा नहीं सकते इसलिए बाप की याद से आत्मा की बैटरी को चार्ज करो और नैचरल पवित्र बनो.

रावण की विकारों रुपी जंजीरों में फँसी आत्माओं को मुक्ति का रास्ता बताते हुए परमात्मा बाप ने कहा, अब अपने घर (परमधाम) वापस जाना है तो बाप की याद से संपूर्ण पवित्र बनो यानी आत्मा की बैटरी को पुरा चार्ज करो और आत्मा को यह पुराना शरीर यहॉ ही छोडकर जाना है तो उसमें जरासा भी ममत्व न हो.

हम सब यह तो जानते है की सारे ज्ञान का सार है की अब घर जाना है फिर सतयुग में आना है. लेकिन हम आत्माये सतयुग में जब पहले-पहले पार्ट बजाने आते है तो हमारी आत्मा की पवित्रता की डिग्री सोलह कला संपूर्ण होती है यानी आत्मा की बैटरी पुरी 100 परसेन्ट चार्ज होती है. फिर जन्म-बाय-जन्म, हमारी आत्मा की पवित्रता की डिग्री कम होती जाती है. अब 84 जन्मों के अन्त में हमारी आत्मा की पवित्रता जीरो डिग्री (जीरो कला) हो जाती है यानी हम आत्मा तो है लेकिन उस पर विकारों कि जंक लग जाती है. तो आत्मा के जो भी ओरिजिनल गुण है पवित्रता, शांति, सुख, प्रेम और आनंद, सब विकारों के नीचे ढक जाते हैं अथवा कहे आत्मा की बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है और इसकी वजह से आत्मा शक्तिहीन बन जाती है. इसे आत्मा का तमोप्रधान स्टेज कहा जाता है.

आत्मा तमोप्रधान बनने से प्रकृति के पांच तत्वों का शरीर भी तमोप्रधान बन जाता है क्योंकि प्रकृति हमेशा पुरुष (आत्मा) को फोलो करती है. इसलिए कलियुग का वायुमण्डल भी गंदा और विकारी बन गया हैं.

अब कलियुग के अन्त में, पुरुषोत्तम संगमयुग पर स्वयं परमात्मा इस धरती पर आते है और स्वर्ग में आने वाली सब आत्माओं को आत्मा-परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अंत का सारा ज्ञान देते है और तमोप्रधान आत्माओं को सतोप्रधान बनने का रास्ता बताते है. जब हम आत्माये, परमपिता-परमात्मा से योग करते है या कहे स्वयं को आत्मा समझ

परमात्मा को याद करते है, तब पतित-पावन बाप से हम आत्माओं में लाइट और माइट भरती जाती हैं. हमारी आत्मा में लाइट आने से, आत्मा में जो विकारों की जंक लगी है वह धीरे-धीरे कम होती जाती है और हमारी आत्मा में माइट (शक्ति) आने से आत्मा शक्तिशाली बनती हैं.

आत्मा में जितनी लाइट आती है उतनी आत्मा जीरो डिग्री से वापस सोलह कला की तरफ आगे बढ़ती जाती हैं और आत्मा में जितनी माइट आती है उतनी आत्मा ईश्वरीय श्रीमत् पर चल, दैवी-गुणों की धारणा करती जाती हैं.

इसे यह साबित होता है जितना हम अभी पुरुषार्थ कर बाबा को ऐक्युरेंट याद करेंगे उतना हम आत्माये वापस हमारा जो ओरिजिनल स्टेज है जिसे आत्मा की संपूर्ण अवस्था कहा जाता है उसको प्राप्त कर सकते हैं. बाबा ने कहा है, अगर आत्माये समय से पहले नैचरल रुप से संपूर्ण नहीं बनी तो सजाये खाकर भी संपूर्णता प्राप्त करनी पड़ेगी, लेकिन इससे सतयुग में पद कम हो जायेगा.

अभी तो हमारे पास समय भी बहुत कम है तो आज से यह नहीं देखे की हम बाबा को कितना याद करते है लेकिन यह देखे की सारे दिन में कितना समय बाबा को भूल जाते है, क्योंकि हमें बाबा को अभी हर पल याद करना ही है.

ॐ शांति.